

गंधार ग्राम- इसका वर्णन भरत ने नहीं किया है। उसने बस इतना ही कहा कि गन्धार ग्राम गांधर्व लोगों के साथ स्वर्ग-लोक में निवास करता है। भरत के बाद नारद, अहोबल, और शारंगदेव ने गंधार ग्राम की चर्चा की है। 'संगीत रत्नाकर' में कहा गया है कि जब रे ग की एक-एक श्रुति गन्धार को, प की एक श्रुति ध को और ध-सा की एक-एक श्रुति निषाद को मिल जाय तो गंधार ग्राम की रचना होती है। इस वर्णन से केवल निषाद को चार श्रुतियां मिलती हैं और शेष स्वरों को 3-3 यथा 1, 4, 7, 10, 13, 16 और 19वीं श्रुति पर नि, सा, रे, ग, म, प और ध स्वर स्थित होते हैं। आगे की तालिका से तीनों ग्रामों का स्वरूप और भी स्पष्ट हो जायेगा।

मूर्छना

क्रमयुक्ताः स्वराः सप्त मूर्छनास्त्वभिसंहिता ।

-नाट्यशास्त्र

भरत के अनुसार क्रम से सप्त स्वरों का आरोह-अवरोह करने से मूर्छना की रचना होती है, लेकिन प्रश्न यह उठता है कि किन सात स्वरों का आरोहावरोह किया जाय। उत्तर यह है कि ग्राम के ही स्वरों का आरोह-अवरोह करने से मूर्छनायें बनती हैं। ग्राम चाहे षड्ज ग्राम हो अथवा मध्यम ग्राम, दोनों से समान रूप से मूर्छनाओं की रचना होती है। 'संगीत रत्नाकर' में कहा गया है, 'ग्राम स्वर-समूहः स्यात्तमूर्च्छनादेः समाश्रयः' अर्थात् ग्राम के ही स्वरों पर मूर्छना आधारित है। ग्राम के किसी भी स्वर को स्वरित (आधार) मान कर उसके ही स्वरों पर आरोह-अवरोह करने से मूर्छना की रचना होती है। उदाहरणार्थ षड्ज ग्राम के रिषभ को आधार मान कर मूर्छना प्रारम्भ करने से गन्धार रिषभ हो जायेगा, मध्यम गन्धार होगा, इत्यादि-इत्यादि। इसी प्रकार ग्राम के शेष स्वरों से ही आरोह-अवरोह करने से मूर्छना की रचना होती है। एक ग्राम में 7 स्वर होते हैं। अतः प्रत्येक ग्राम से 7 मूर्छनाओं की रचना सम्भव है। अतः षड्ज, गन्धार और मध्यम ग्रामों से कुल $7 \times 3 = 21$ मूर्छनायें बनती हैं।

मूर्छना और आधुनिक थाटों की तुलना-

सर्वप्रथम षड्ज ग्राम की मूर्छनाओं की तुलना आधुनिक थाट से करेंगे। इस ग्राम के सातों स्वर क्रमशः 4, 3, 2, 4, 3, 2 श्रुतियों की दूरी पर स्थित हैं।

(1) पहली मूर्छना षड्ज से प्रारम्भ होगी। अतः 4थी पर सा